भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर
ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur
An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए २९अक्तूबर से ४ नवम्बर २०२६ तक इक्कीसवी साप्ताहिक सलाह

अ. मृदा स्वास्थ्य, पोषण, कीट और रोग प्रबंधन पर सामान्य सलाह

कपास की अधिक पैदावार संतुलित मृदा पोषण, जल प्रबंधन और सक्रिय, निगरानी-आधारित कीट एवं रोग प्रबंधन पर निर्भर करती है। एक समग्र और एकीकृत फसल प्रबंधन योजना को लागू करने से उचित वृद्धि और मजबूती सुनिश्चित होती है, लागत कम होती है और फसल को विनाशकारी कीटों और रोगों से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है।

मृदा स्वास्थ्य एवं पोषण प्रबंधन (आईएनएम)

- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का अनुकूलन करें**: फसल चक्र, जैविक संशोधनों और आवरण फसलों को प्राथमिकता देकर और बुवाई से पहले मिट्टी परीक्षण के आधार पर तर्कसंगत रासायनिक उर्वरक का उपयोग करके मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करें।
- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग करें:** आवश्यकतानुसार लक्षित पर्ण स्प्रे के माध्यम से द्वितीयक और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी (जैसे जस्ता, बोरॉन, मैंगनीज और मैग्नीशियम) को सक्रिय रूप से दूर करें।

रोग प्रबंधन (आईडीएम)

- **निवारक उपायों को अपनाएं:** मिट्टी जनित और पर्ण जनित दोनों प्रकार के रोगजनकों का प्रबंधन एकीकृत कृषि पद्धतियों के माध्यम से किया जाना चाहिए, जिसमें उचित खेत की स्वच्छता और पौधों के स्वास्थ्य को बढ़ाने और रोग की घटनाओं को कम करने के लिए बीज और मिट्टी के उपचार के रूप में जैव कीटनाशकों और जैव उर्वरकों का अनुप्रयोग शामिल है।
- **पत्तों पर होने वाले प्रकोपों को नियंत्रित करें:** उच्च आर्द्रता की अवधि के दौरान नियमित रूप से खेत की निगरानी की जानी चाहिए, और अनुशंसित फफूंदनाशकों का प्रयोग विवेकपूर्ण तरीके से केवल तभी किया जाना चाहिए जब प्रचलित पर्यावरणीय परिस्थितियां रोग के तेजी से विकास और प्रसार के लिए अनुकूल हों।

एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम)

- **क्षेत्र निरीक्षण करें**: थ्रिप्स, तेला, तेला और स्पाइडर माइट्स जैसे चूसने वाले कीटों के साथ-साथ सुंडी की निगरानी के लिए साप्ताहिक क्षेत्र निरीक्षण करें।

- **जाल और जैव-कीटनाशकों का उपयोग करें:** वयस्क पतंगों की उड़ान पर नज़र रखने, अंडे देने के चक्रों का अनुमान लगाने और प्राथमिक प्रतिक्रिया के रूप में जैविक, प्राकृतिक या पौधों पर आधारित कीटनाशकों का प्रयोग करने के लिए मौसम की शुरुआत में ही फेरोमोन जाल लगाएं।

- **प्राकृतिक शत्रुओं का संरक्षण करें:** लेडी बीटल, लेसविंग्स और बिग-आइड बग जैसे लाभकारी कीटों की रक्षा के लिए व्यापक-स्पेक्ट्रम फ़ार्मुलों के बजाय अत्यधिक चयनात्मक कीटनाशकों का चयन करें।
- **रासायनिक हस्तक्षेपों को सीमित करें:** लेबल पर अनुशंसित रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग सख्ती से अंतिम उपाय के रूप में करें, और उनका केवल तभीउपयोगकरें जब कीटों की संख्या निर्धारित आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक सीमा स्तर सीमा तक पहुंच जाए।

स्वच्छ तरीके से कपास चुनना और भंडारण

- अच्छी बाजार कीमत प्राप्त करने के लिए स्वच्छ कपास चुनने की मानक प्रक्रियाओं का पालन करें।
- कपास कि थैलियों के अलावा प्लास्टिक बैग, प्लास्टिक शीट या अन्य सामग्री का उपयोग कपास के संग्रहण और भंडारण के लिए न करें।

ब .स्थान-विशिष्ट सलाह

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अक्तूबर							अक्तूबर /**नवम्बर**				
		20	**21**	**22**	**23**	**24**	**25**	**26**	**28**	**29**	**30**	**31**	**01**
	हिसार	0	0	0	0	0	0	0	0	0.2	3.5	1.5	0.1
	जींद								0	0.2	3.4	2.4	0.1
	सिरसा								0	0	0.4	0	0
	रोहतक	0	0	0	0	0	0	0	0	0.1	1.9	1.9	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी			64.5 से 115.5 मिमी			115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

हिसार में फसल, डोडे (गुलर) विकसित होने/परिपक्व (पककर तैयार) होने कि अवस्था में है। अधिकांश खेतों में कपास कि दूसरी से तीसरी तुड़ाई चल रही है। अधिकांश खेतों में कपास के डस्की बग कीटों का प्रकोप देखा गया है। गुलाबी सुंडी के कारण हरे डोडे को नुकसान और फेरोमोन जाल में गुलाबी सुंडी का फसना अधिकांश खेतों में आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक सीमा स्तर से अधिक है। कुछ खेतों में डोडों में सडन के साथ-साथ कपास पत्ती मरोड़ विषाणु रोग की गंभीरता कम देखी गई। हल्की मिट्टी वाले कुछ खेतों में जड़ सड़न और मुरझान भी देखी गई।

सिरसा में, फसल, डोडे (गुलर) खुलने और कपास कि तुड़ाई के चरण कि अवस्था में 177 दिन कि हो चुकी है। अधिकांश स्थानों पर दूसरी तुड़ाई लगभग पूरी हो चुकी है। गुलाबी सुंडी का प्रकोप भी आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक सीमा स्तर से ऊपर देखा गया है, जिससे 20-45% हरे डोडों को नुकसान पहुंचा है।वर्गाकार फुल पाती, आधे खुले हरे डोडों, ब्रेक्टियोल, खुले डोडोंऔर तोडे गई डोडों (गुलरों) में डस्की कॉटन बग (DCB) की बहुत अधिक संख्या देखी गई है।

सलाह:

हिसार में किसानों को कपास के खेतों में सिंचाई न करने की सलाह दी जाती है। कपास में डोडे और बेहतर खुलने के लिए आवश्यकतानुसार 00:00:50 का 2 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से पर्णीय छिड़काव करें। गुलाबी सुंडी का प्रकोप शुरू होने के बाद, 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ की दर से लगाएं। गुलाबी सुंडी के संक्रमण की जांच के लिए प्रति एकड़ कम से कम 100 फूल या 20 हरे डोडों का निरीक्षण करें। यदि गुलाबी सुंडी का संक्रमण आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक सीमा स्तर (>5%) से अधिक हो जाता है, तो इमेमेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @100 ग्राम या प्रोफेनोफोस 50 ईसी @500 मिली प्रति एकड़ या क्विनालफोस 20 एएफ @400 मिली प्रति एकड़ का छिड़काव करें। पिछले छिड़काव के 10-12 दिन बाद वैकल्पिक कीटनाशक का अनुवर्ती छिड़काव किया जा सकता है। जड़ सड़न और मुरझाने से प्रभावित क्षेत्रों में, प्रभावित पौधों की जड़ों और आसपास के पौधों

को 1.2 ग्राम/लीटर पानी की दर से कार्बेन्डाजिम 50 WP से अच्छी तरह भिगो दें। यदि परविल्ट दिखाई दे, तो लक्षण विकसित होने के तुरंत बाद से एक-एक सप्ताह के अंतराल पर 2-3 बार कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% WP @ 120 ग्राम प्लस यूरिया 2 किलोग्राम प्रति 100 लीटर पानी के घोल से सींचें। फली सड़न और पत्ती धब्बों के प्रबंधन के लिए, कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डब्ल्यूपी @ 30 ग्राम का पर्णीय छिड़काव, इसके बाद प्रोपिनेब 70% डब्ल्यूपी @ 25-30 ग्राम या प्रोपिकोनाजोल 25% ईसी @ 10 मिलीलीटर या एजोक्सिस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफिनोकोनाजोल 11.4% w/w एससी @ 10 मिलीलीटर या फ्लक्सैपायरोक्साड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 मिलीलीटर को 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने की सलाह दी जाती है, विशेष रूप से फूल आने के 60-120 दिनों के दौरान और मौसम की स्थिति के अनुसार। फसल की स्थिति, फलियों की संख्या और आर्थिक व्यवहार्यता का आकलन करने के बाद ही रासायनिक खाद का प्रयोग करें। धूप वाले दिनों में अच्छी तरह से खिली हुई फलियों को तोड़ें और उपज को ठंडी और सूखी जगह पर संग्रहित करें। तनावग्रस्त अच्छी तरह से खिली हुई डोडों को नमी पूरी तरह सूखने के बाद ही तोड़ें।

सिरसा में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे कपास को सूखा, कचरे से मुक्त और ओस रहित अवस्था में तोड़ें। बीज कपास को साफ-सुथरे और चूहे रहित गोदामों/कमरों में संग्रहित करें। प्रति एकड़ 2 फेरोमोन ट्रैप (लगातार 3 रातों तक 5-8 पतंगे पकड़ना) या हरे डोडों का नियमित अंतराल पर नमूना लेकर (प्रति एकड़ 20 डोडों में से 2 क्षतिग्रस्त डोडे) गुलाबी सुंडी की निगरानी करें ताकि आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक सीमा स्तर का आकलन किया जा सके। कपास के कीट (गुलाबी सुंडी) के लिए, 150-200 लीटर पानी में प्रति एकड़ 800 मिलीलीटर एथियन 50 ईसी, 100-200 मिलीलीटर फेनवेलरेट 20 ईसी, 200 मिलीलीटर लैम्डा-साइहलोथ्रिन 5 ईसी, 200 मिलीलीटर साइपरमेथ्रिन 10 ईसी, 200-300 मिलीलीटर साइपरमेथ्रिन 25 ईसी, 80-100 मिलीलीटर डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी, 160-200 मिलीलीटर अल्फामेथ्रिन 10 ईसी, 100-125 मिलीलीटर अल्फामेथ्रिन 10 ईसी, या 300-400 मिलीलीटर फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी का प्रयोग करें। आवश्यकता पड़ने पर कीटनाशकों का प्रयोग बारी-बारी से करें। ये कीटनाशक कपास के डस्की बग कीटों को भी नियंत्रित करेंगे। फसल की स्थिति, डोडों की संख्या और आर्थिक व्यवहार्यता का आकलन करने के बाद ही रासायनिक पदार्थों का प्रयोग करें। कपास की तुड़ाई के बाद संक्रमित पौधों/पौधों के भागों को खेत की मिट्टी में न मिलाएँ। आर्थिक रूप से संभव होते ही फसल को जल्द से जल्द समाप्त कर दें। इससे सुंडियों से होने वाले नुकसान को कम किया जा सकेगा और अगले फसल मौसम तक उनका प्रसार भी रुकेगा। कपास कि अंतिम तुड़ाई के बाद, भेड़ और बकरियों को खेत में चरने दें ताकि सुंडियों का प्रसार कम हो सके। यदि संभव हो, तो कपास के डंठलों को बारीक काटकर मिट्टी में मिला दें और फिर बारीक कटे हुए डंठलों पर 5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से ट्राइकोडर्मा वेटेबल पाउडर का घोल छिड़क दें। यदि आवश्यक हो, तो कपास के डंठलों को खेत से दूर सीधा ढेर लगा दें। रोगग्रस्त पौधों को खेत में न मिलाएँ।

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अक्तूबर							अक्तूबर **/नवम्बर**				
		20	**21**	**22**	**23**	**24**	**25**	**26**	**28**	**29**	**30**	**31**	**01**
	अजमेर	0	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0.9	0.2	0
	जोधपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	नागौर								0	0	0.7	0.2	0
	पाली	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0.3	0.2	0
	श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी				64.5 से 115.5 मिमी		115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा				भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

<u>फसल की स्थिति</u>:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में फसल, कपास कि तुड़ाई कटाई के चरण में है। अधिकांश खेतों में तुड़ाई का काम चल रहा है।

बांसवाड़ा में, फसल 113 से 120 दिन कि और डोडे (गुलर) बनने/विकसित होने की अवस्था में है। खेत साफ हैं। फसल तनावग्रस्त अवस्था में है। रस चूसने वाले कीटों में, सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक सीमा स्तर से कम और तेला का प्रकोप आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक सीमा स्तर से अधिक था।गुलाबी सुंडी का कोई संक्रमण नहीं है। कुछ खेतों में जड़ सड़न और मुरझाने के लक्षण देखे गए हैं।

सलाह :

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे फसलों में कीटों और बीमारियों की नियमित निगरानी करें। कपास कि तुड़ाई के समय कीटनाशकों का छिड़काव बंद कर दें। कपास कि अंतिम तुड़ाई के बाद, भेड़ और बकरियों को खेत में चरने दें ताकि सुंडियों का फैलाव कम हो सके। यदि संभव हो, तो कपास के डंठलों को बारीक काटकर मिट्टी में मिला देना उचित रहेगा।

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद, सलूंबर और उदयपुर) में किसानों को कपास के खेतों में रस चूसने वाले कीटों के संक्रमण के किसी भी लक्षण की निगरानी जारी रखने की सलाह दी जाती है। यदि कीटों की संख्या आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक सीमा स्तर से अधिक हो जाए, तो उन्हें नियंत्रित करने के लिए 5% नीम के बीज के अर्क (एनएसकेई) या एज़ाडिराक्टिन 1500 पीपीएम (0.15% ईसी) का 5 मिली/लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। सफेद मक्खी और तेला को नियंत्रित करने के लिए 8-10 पीले चिपचिपे जाल प्रति एकड़ लगाएं। यदि चूसने वाले कीटों की संख्या आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक सीमा स्तर से अधिक हो जाए, तो इनमें से किसी एक कीटनाशक का छिड़काव करें: बुप्रोफेज़िन 25 ईसी @ 1.25 लीटर/हेक्टेयर या डायफेंथियूरॉन 50 डब्ल्यूपी @ 625 ग्राम/हेक्टेयर या फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 200 ग्राम/हेक्टेयर। गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए फेरोमोन जाल लगाएं (5 प्रति हेक्टेयर)। गुलाबी सुंडी की उपस्थिति पर नियमित रूप से नज़र रखें और सुंडी प्रभावित फूलों (रोसेट फूल) को इल्लियों सहित नष्ट कर दें। देर से बोई गई फसलों में पत्ती धब्बा रोग के प्रबंधन के लिए, 30 ग्राम कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डब्ल्यूपी का पर्णीय छिड़काव करें, इसके बाद 25-30 ग्राम प्रोपिनेब 70% डब्ल्यूपी या 10 मिलीलीटर प्रोपिकोनाजोल 25% ईसी या 10 मिलीलीटर एजोक्सिस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफिनोकोनाजोल 11.4% w/w एससी या 6 मिलीलीटर फ्लक्सैपायरोक्साड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी को 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। फफूंदनाशक या कीटनाशक का छिड़काव फसल की स्थिति, डोडों (गुलरों) की संख्या और फसल किआर्थिक व्यवहार्यता का आकलन करने के बाद ही करें।

.

मध्य प्रदेश		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अक्तूबर							अक्तूबर /**नवम्बर**				
		20	**21**	**22**	**23**	**24**	**25**	**26**	**28**	**29**	**30**	**31**	**01**
	खरगाँव	0	0	0	0	0	0	0	0	0.2	0.4	0.1	0.1
	धार	0	0	0	4.2	0	0	0	0	0	0.6	0.2	0.1
	खांडवा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0.3	0.1	0.1
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी				64.5 से 115.5 मिमी		115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा				भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

खंडवा में बोई गई फसल फूल आने और डोडे (गुलर) बनने/विकसित होने की अवस्था में 105 से 153 दिन पुरानी है। निराई-गुड़ाई और आवश्यकतानुसार उर्वरक दिए गए हैं। मौसमी खरपतवारों ने खेतों को बुरी तरह प्रभावित किया है। कुछ खेतों में तेला , चेपा और सफेद मक्खियों का प्रकोप देखा गया है। अभी तक किसी भी प्रकार की बीमारी की सूचना नहीं मिली है।

सलाह:

खंडवा में किसानों को समय पर खरपतवार नियंत्रण करने की सलाह दी जाती है। यदि लंबे समय तक सूखे के कारण फसल में नमी की कमी हो रही है, तो 13:00:45 के दोपर्णीय छिडकाव (स्प्रे) 2 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से 150 से 200 लीटर पानी में मिलाकर 10 दिनों के अंतराल पर दें। गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं। रस चूसने वाले कीटों को नियंत्रित करने के लिए NSKE 5% + नीम का तेल 5 मिली/लीटर या नीम के तेल आधारित फॉर्मूलेशन (300 या 1500

पीपीएम) 5 मिली/लीटर + 1.0 ग्राम लॉन्ड्री डिटर्जेंट इमल्शन का प्रयोग करें। यदि पैराविल्ट रोग दिखाई दे, तो लक्षण विकसित होने के तुरंत बाद एक-एक सप्ताह के अंतराल पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% WP @ 100 ग्राम प्लस यूरिया 2 कि.ग्रा. प्रति 100 लीटर पानी के घोल से 2-3 बार सिंचाई करें। कपास के फूलों को प्राकृतिक रूप से झड़ने से बचाने के लिए 4 मिलीलीटर एनएए को 10 लीटर पानी में मिलाकर पत्तियों पर छिडकाव (स्प्रे) करें।

कपास उत्पादन तकनीक, जैसे मिट्टी का चयन, किस्में, उर्वरकों का प्रयोग, बुवाई के तरीके, सिंचाई प्रणाली, खरपतवारों, कीटों और रोगों का प्रबंधन आदि की विस्तृत जानकारी आईसीएआर-सीआईसीआर, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित सीआईसीआर कॉटन ऐप से प्राप्त की जा सकती है। इस ऐप को गूगल प्ले स्टोर से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल वृद्धि अवस्था विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह आईसीएआर-सीआईसीआर की वेबसाइट)https://cicr.org.in/resource-weekly-advisory) पर भी अपलोड की जाती है ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श किया जा सके।

Advisory issued by:
Dr. Vijay N. Waghmare
Director, ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur

Compilation by Dr. Isabella Agarwal

Editing Team:

Dr. G. T. Behere	Dr. A. S. Tayade	Dr. A. H. Prakash	Dr. S.K. Verma
Dr. S.K. Sain	Dr. Rishi Kumar	Dr. Babasaheb B. Fand	Dr. Ramkrushna GI
Dr. S.P Gawande	Dr. Shivaj Thube	Dr. R.R. Chapke	

Regional language translation:

Hindi	: Mr Ghanshyam Deogirikar & Mr Ashutosh Mishra
Punjabi	: Dr Amarpreet Singh
Tamil	: Dr. A. Manikandan & Dr. M Saravanan
Telugu	: Dr L. Rajesh Chaudhary
Marathi	: Dr Vrushali Deshmukh & Mrs Pooja Ghonge
Gujrati	: Dr H R. Desai & Dr Vivek Shah
Oriya	: Dr B. S. Nayak
Kannada	: Dr Neelkanth Hiremani